ध्यान से ज्ञान दीपक ! प्रज्वलन आत्म साधना

यह जगत सारा क्षणिक है, और आत्मा एक नित्य है।

आत्मा का अनुभव, बस एक मात्र नित्य है।।

चैतन्य स्वभावी भगवान आत्मा अनादि-अनंत शुध्द चैतन्य मात्र है, ज्ञान मात्र है। मैं शुध्द चैतन्य मात्र, ज्ञान मात्र, भगवान आत्मा हूँ। तीन लोक के किसी भी प्रदेश पर रहकर भी, मैं चैतन्य प्रदेशों पर ही स्थित हूँ। मैं देहरुपी राख की दीवार का पडोसी चैतन्य परमात्मा हूँ। मैं अपने चैतन्य महल की ज्ञान की खिडकी से मेरी पडोसन राख की दीवार को मात्र जानता-देखता हूँ। राख की दीवार के माता-पिता-भाई-बहन-पुत्र-पुत्री-परिवारजन अत्यंत दूरवर्ती हैं। धन का ढेर धुल की दीवार, महल मिट्टी की दीवार, देह राख की दीवार और रिश्ते कांच की दीवार हैं। इन दीवारों से बना संसाररुपी हवामहल अपनापन करने योग्य नहीं। चैतन्य रस के घनपिंड में परद्रव्य तो दूर, परभाव को भी प्रवेश करने के लिये अवकाश नहीं है। प्रशंसक और निंदक की वाणी तो दूर, वाणी के विकल्प भी मुझमें प्रवेश नहीं कर सकते। ज्ञान जानता है, वह झुकता नहीं है और राग झुकता है, वह जानता नहीं है। रागादि विकल्प रुपी वैतरणी अधोलोक में बहती है, चैतन्य मध्यलोक में ज्ञान की गंगा ही बहती है। चैतन्य सत्ता रागादि विकल्प एवं देह की क्रिया करने नहीं जाती, इसलिये रागादि विकल्प एवं देह की क्रिया का कर्ता नहीं। मैं चैतन्य सत्ता मात्र हूँ।

🙏 **~: ओम्-ओम्-ओम् :~** 🙏